



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 1; Issue 1; 2023; Page No. 408-411

Received: 02-08-2023

Accepted: 08-09-2023

ज्ञान, कौशल और मनोवृत्ति चर पर शिक्षण दक्षताओं को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

¹तन्मय कुमार गुप्ता, ²डॉ. महीप कुमार मिश्रा

¹रिसर्च स्कॉलर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

²प्रोफेसर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: तन्मय कुमार गुप्ता

सारांश

प्रौद्योगिकी मध्यम आय वाले देशों में विभिन्न तरीकों से गहन शिक्षा के वित्तीय बोझ को कम कर सकती है। उदाहरण के लिए, कैपस में पारंपरिक कक्षाओं में भाग लेने की तुलना में ऑनलाइन पाठ्यक्रम अधिक किफायती हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों के पास व्याख्यान, वीडियो और रीडिंग जैसी मुफ्त शैक्षिक सामग्री तक अधिक पहुंच है; इससे पाठ्यपुस्तकों और संबंधित सामग्रियों की खरीद की लागत को कम करने में मदद मिलती है। आभासी प्रयोगशालाएँ छात्रों के लिए विभिन्न कौशलों का अभ्यास करने और महंगे उपकरण या प्रयोगशाला स्थान की आवश्यकता को समाप्त करते हुए प्रयोग करने के अवसर पैदा करती हैं। अनुकूली सॉफ्टवेयर व्यक्तिगत छात्रों के लिए निर्देश को अनुकूलित करता है जिससे सीखने की प्रभावशीलता और दक्षता में सुधार होता है, जिससे विशेष रूप से विकासशील दुनिया में ट्यूशन या पुनः मध्यस्थता के लिए अतिरिक्त लागत में कटौती होती है। अंत में, ई-पुस्तकें अक्सर मुद्रित पुस्तकों की तुलना में सस्ती होती हैं और इन्हें विभिन्न उपकरणों से एक्सेस किया जा सकता है, जिससे छात्रों को पाठ्यपुस्तकों और अन्य सामग्रियों के लिए अपने खर्चों को कम करने में मदद मिलती है।

मुख्य शब्द: प्रौद्योगिकी, विकासशील, व्याख्यान, वीडियो, प्रभावशीलता

1. प्रस्तावना

भारत ने पिछले कुछ दशकों में शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि, भारतीय स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता चिंता का विषय बनी हुई है। हालाँकि भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई सुधार हुए हैं, लेकिन देश की शिक्षा गुणवत्ता में सुधार के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

भारत में शिक्षा की खराब गुणवत्ता का एक मुख्य कारण प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों की कमी है। एनएसएसओ: नेशनल सैपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग एक-तिहाई शिक्षकों के पास पढ़ाने के लिए आवश्यक योग्यता नहीं है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है क्योंकि अप्रशिक्षित शिक्षक छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में कम सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, कई शिक्षकों के पास आधुनिक शिक्षण तकनीकों में पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव है और वे अपने छात्रों को एक इंटरैक्टिव और आकर्षक शिक्षण अनुभव प्रदान नहीं कर पाते हैं।

एक अन्य मुद्दा कई स्कूलों में पुराना पाठ्यक्रम है। अधिकांश

भारतीय स्कूलों में पाठ्यक्रम रटने पर आधारित है, जो समझने के बजाय याद करने पर केंद्रित है। इससे आलोचनात्मक सोच कौशल की कमी हो जाती है और छात्रों के लिए जो सीखा जाता है उसे वास्तविक जीवन की स्थितियों में लागू करना कठिन हो जाता है। इसके अलावा, पाठ्यक्रम को अक्सर नियमित रूप से अद्यतन नहीं किया जाता है, जिससे छात्रों को पुरानी जानकारी सीखने को मिलती है।

भारतीय स्कूलों में शिक्षा की खराब गुणवत्ता के लिए बुनियादी ढांचे और संसाधनों की कमी भी एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। भारत के ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में बिजली, साफ पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसके अतिरिक्त, शहरी क्षेत्रों के स्कूलों में सर्वांगीण शिक्षा प्रदान करने के लिए कंप्यूटर और पुस्तकालय जैसे पर्याप्त संसाधन नहीं हो सकते हैं। संसाधनों और बुनियादी ढांचे की कमी भी शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, क्योंकि शिक्षकों के पास आवश्यक शिक्षण सहायता और सामग्री तक पहुंच नहीं हो सकती है।

छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी उनकी शिक्षा गुणवत्ता

निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चे अक्सर अपर्याप्त सुविधाओं और संसाधनों वाले खराब वित्त पोषित स्कूलों में जाते हैं। इसके अलावा, ऐसे छात्रों को अपने परिवार का समर्थन करने के लिए काम करना पड़ सकता है, जिससे उनकी उपस्थिति और स्कूल के प्रदर्शन पर असर पड़ेगा।

भारतीय स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने होंगे। सबसे पहले, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी शिक्षक पढ़ाने के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित और योग्य हों। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश करना और पेशे में प्रतिभा को आकर्षित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना आवश्यक है। दूसरे, 21वीं सदी में सफल होने के लिए छात्रों को आधुनिक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अद्यतन किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, सरकार को विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में बुनियादी ढांचे और संसाधनों में सुधार के लिए निवेश करना चाहिए। अंत में, सभी छात्रों को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना समान अवसर प्रदान करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।

2. साहित्य की समीक्षा

कौर, अशनीत. (2020)। शिक्षा एक विकासशील अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। ऐसे में हमें शिक्षा प्रणाली को लगातार उन्नत करने की जरूरत है। भारत में यद्यपि विकास धीमा लेकिन स्थिर रहा है। हम पारंपरिक कक्षा प्रणाली से स्मार्ट बोर्ड कक्षाओं में स्थानांतरित हो गए हैं। इसके अलावा, इस महामारी ने साबित कर दिया है कि कक्षा का भविष्य ऑनलाइन हो सकता है या कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसकी जगह ले सकती है। यह पेपर उच्च शिक्षा में छात्रों के प्रदर्शन पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास करता है। वर्तमान शोध के लिए डेटा दिल्ली और एनसीआर के पास के विभिन्न कॉलेजों से 112 छात्रों के नमूना आकार के साथ एकत्र किया गया है। सहसंबंध और प्रतिगमन का उपयोग छात्रों के प्रदर्शन पर कंप्यूटर सहायता प्राप्त शिक्षा, उपयोगिता, आत्म-प्रभावकारिता, प्रौद्योगिकी प्रभावकारिता और उपयोगकर्ता निराशा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। निष्कर्षों से पता चलता है कि स्मार्ट कक्षाओं की उपयोगिता उच्च शिक्षा के प्रदर्शन में प्रमुख योगदान देती है, इसके बाद आत्म-प्रभावकारिता और सीईई का स्थान आता है। हालांकि उपयोगकर्ता की निराशा का छात्रों के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है सिंह, पद्मलिनी एट अल. (2021)। अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा के माध्यम से ऑनलाइन और ऑफलाइन सीखने की प्रभावशीलता का आकलन करना है। 2020 में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कोविड-19 के अचानक फैलने से विभिन्न देशों में शैक्षणिक संस्थान बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। छात्र सीखने के मिश्रित रूप को स्वीकार करने और ऑनलाइन आयोजित की जाने वाली कक्षाओं के प्रति रुचि को समझने के तरीके से प्रभावित हुए। अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा में ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता की जांच करना है। यह अध्ययन भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया और अन्य देशों में 100 उत्तरदाताओं के साथ किया गया था, जिनमें से प्रमुख प्रतिक्रियाएं बैचलर प्रोग्राम, डिप्लोमा और मास्टर में पढ़ रहे युवा आबादी से थीं। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता निराशाजनक है, क्योंकि छात्रों को शिक्षा के ऑनलाइन मोड में समायोजित करना मुश्किल लगता है और शिक्षा का ऑफलाइन मोड शिक्षा का सबसे पसंदीदा तरीका बना हुआ है।

मलिक, नविता और अन्य। (2015)। सार यह पेपर शैक्षणिक उपलब्धि और बुद्धिमत्ता के संबंध में पारंपरिक कक्षा की तुलना में स्मार्ट कक्षा की प्रभावशीलता की तुलना करने पर केंद्रित है। अध्ययन के लिए 13-15 वर्ष की आयु के आठवीं कक्षा के 40 छात्रों का चयन किया गया था और 20 छात्रों के दो समूह बनाए गए थे। प्रायोगिक और नियंत्रण समूह में प्रत्येक। प्रायोगिक समूह को स्मार्ट बोर्ड तकनीक कक्षा और नियंत्रण समूह को पारंपरिक कक्षा के माध्यम से पढ़ाया गया। जलोटा का सामान्य मानसिक योग्यता का समूह परीक्षण नियोजित किया गया था। डेटा का विश्लेषण बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक का पता लगाकर किया गया था और "टी-टैल्यू" की गणना महत्वपूर्ण अंतर के रूप में की गई थी। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष यह हैं कि बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसंबंध है। जब स्मार्ट क्लासरूम तकनीक के माध्यम से अध्ययन करने वाले छात्रों में पाया गया कि बुद्धि के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि बेहतर थी। कीवर्ड: शैक्षणिक उपलब्धि, बुद्धिमत्ता, स्मार्ट क्लासरूम तकनीक और पारंपरिक कक्षा।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. शिक्षण दक्षताओं के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण चर पर जनसांख्यिकीय चर के प्रभाव की पहचान करना।
2. ज्ञान, कौशल और मनोवृत्ति चर पर शिक्षण दक्षताओं को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंधों का अध्ययन करना

4. कार्यप्रणाली

जनसंख्या से एक नमूना लिया जाता है और फिर सर्वेक्षण किया जाता है। नमूना जनसंख्या का एक हिस्सा है जिसका अध्ययन पूरी जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए किया जाता है। यदि नमूना पर्याप्त है तो इसमें जनसंख्या की समान विशेषताएं होंगी (ज़िकमंड, 2003) और निष्कर्षों का उपयोग आमतौर पर जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए किया जाता है। नमूना इकाई को गुजरात राज्य भर में गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से संबद्ध प्रबंधन संस्थानों में पढ़ाने वाले संकायों पर विचार किया गया था। सर्वेक्षण के एक भाग के रूप में 36 एमबीए संस्थानों को शामिल किया गया था। गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से संबद्ध प्रबंधन संस्थानों में पढ़ाने वाले सभी पात्र संकाय, योग्य और स्थायी, इस अध्ययन के लिए उत्तरदाता हैं। नमूना आकार का इस बात पर प्रभाव पड़ता है कि नमूना निष्कर्ष जनसंख्या का सटीक प्रतिनिधित्व कैसे करते हैं (बर्न्स एंड बुश, 2010)। नमूना जितना बड़ा होगा, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि सामान्यीकरण जनसंख्या का सटीक प्रतिबिंब होगा (सॉन्डर्स, लुईस और थॉर्नहिल, 2009) सामान्य तौर पर, सांख्यिकीय पुस्तकों के लेखकों के बीच यह समझ रही है कि नमूना जितना बड़ा होगा, उसके लिए उतना ही उपयुक्त होगा। विभिन्न सांख्यिकीय विश्लेषणों का उपयोग (पैलेंट, 2007)। प्रश्नावली गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से संबद्ध एमबीए संस्थानों में पढ़ाने वाले 386 संकायों को संबोधित थी। उत्तरदाताओं की कुल संख्या 386 है लेकिन केवल 358 प्रश्नावली पर विचार किया गया क्योंकि शेष पूरी तरह से नहीं भरी गई थीं। सर्वेक्षण में 36 एमबीए संस्थानों को शामिल किया गया डेटा संग्रह सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया जाता है। मल्होत्रा और दास (2009) सर्वेक्षण पद्धति को उत्तरदाताओं से पूछताछ के आधार पर जानकारी प्राप्त करने की एक पद्धति के रूप में परिभाषित करते हैं।

गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी से संबद्ध एमबीए संस्थानों की पहचान के माध्यम से डेटा संग्रह की योजना बनाई गई थी। स्थायी स्नातकोत्तर शिक्षकों की पहचान की गई और उनसे शिक्षण दक्षताओं के संबंध में एक प्रश्नावली भरने के रूप में अपने इनपुट देने का अनुरोध किया गया। उत्तरदाताओं को पदनाम, आयु और अनुभव के प्रति किसी भी पूर्वाग्रह के बिना संस्थान भर में ले जाया गया। प्रश्नावली को प्रत्यक्ष बैठक, ईमेल और Google फॉर्म के माध्यम से संबोधित किया गया था। इस बात का पूरा ध्यान रखा गया कि शिक्षण संकायों के शैक्षणिक कार्यक्रम में खलल न पड़े और इसलिए मैनुअल प्रश्नावली, गूगल फॉर्म आदि के माध्यम से उनकी अपनी सुविधानुसार प्रतिक्रियाएँ ली गईं।

5. डेटा विश्लेषण

5.1 पूर्ण वर्षों में शिक्षण अनुभव

तालिका 1: शिक्षण अनुभव के अनुसार पूर्ण वर्षों में उत्तरदाताओं का विवरण

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|----------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | 0-5 वर्ष | 137 | 38.3 | 38.3 | 38.3 |
| | 6-10 वर्ष | 157 | 43.9 | 43.9 | 82.1 |
| | 11-15 वर्ष | 49 | 13.7 | 13.7 | 95.8 |
| | 16-20 वर्ष | 10 | 2.8 | 2.8 | 98.6 |
| | 20 वर्ष से ऊपर | 5 | 1.4 | 1.4 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: 358 उत्तरदाताओं में से, 38% के पास 0-5 साल के बीच शिक्षण अनुभव है, 44% के पास 6-10 साल के बीच, 14% के पास 11-15 साल के बीच, 3% के पास 16-20 साल के बीच और 1% के पास 20 साल से ऊपर है।

पूर्ण वर्षों में गैर-शैक्षणिक अनुभव

तालिका 2: पूर्ण वर्षों में उत्तरदाताओं का गैर-शैक्षणिक अनुभव वार विवरण

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|----------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | 0-5 वर्ष | 245 | 68.4 | 68.4 | 68.4 |
| | 6-10 वर्ष | 91 | 25.4 | 25.4 | 93.9 |
| | 11-15 वर्ष | 11 | 3.1 | 3.1 | 96.9 |
| | 16-20 वर्ष | 6 | 1.7 | 1.7 | 98.6 |
| | 20 वर्ष से ऊपर | 5 | 1.4 | 1.4 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: 358 उत्तरदाताओं में से, 68% के पास शिक्षा के अलावा 0-5 साल का अनुभव है, 25% के पास 6-10 साल के बीच, 3% के पास 11-15 साल के बीच, 2% के पास 16-20 साल के बीच और 2% के पास 20 साल से ऊपर का अनुभव है।

तालिका 3: उच्चतम शैक्षणिक योग्यता के अनुसार विवरण

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|-----------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | डाक स्नातक | 273 | 76.3 | 76.3 | 76.3 |
| | डॉक्टर की उपाधि | 85 | 23.7 | 23.7 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: 358 उत्तरदाताओं में से 76% के पास स्नातकोत्तर योग्यता है जबकि 24% के पास डॉक्टरेट की डिग्री है।

6. वर्तमान में पदनाम

तालिका 4: उत्तरदाताओं का वर्तमानवार विवरण के अनुसार पदनाम

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|-----------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | सह्यक प्रोफेसर | 264 | 73.7 | 73.7 | 73.7 |
| | पाठक | 35 | 9.8 | 9.8 | 83.5 |
| | सह - प्राध्यापक | 28 | 7.8 | 7.8 | 91.3 |
| | प्रोफेसर | 14 | 3.9 | 3.9 | 95.3 |
| | निदेशक | 17 | 4.7 | 4.7 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: 358 उत्तरदाताओं में से 74% एपी हैं, 10% रीडर हैं, 8% एसोसिएट प्रोफेसर हैं, 4% प्रोफेसर हैं और 4% निदेशक पद पर हैं।

तालिका 5: दैनिक कामकाजी घंटों के प्रति धारणा

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|----------------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | बिल्कुल भी सीमा नहीं | 8 | 2.2 | 2.2 | 2.2 |
| | छोटी सीमा | 22 | 6.1 | 6.1 | 8.4 |
| | मध्यम सीमा | 25 | 7.0 | 7.0 | 15.4 |
| | काफ़ी हद तक | 187 | 52.2 | 52.2 | 67.6 |
| | बहुत बड़ा विस्तार | 116 | 32.4 | 32.4 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: ऐसा पाया गया है कि 32.4% उत्तरदाताओं को लगता है कि दैनिक कामकाजी घंटे शिक्षण योग्यता को काफ़ी हद तक प्रभावित करने वाला कारक है और 52.2% को लगता है कि यह काफ़ी हद तक ही प्रभावित करता है। 2.2% उत्तरदाताओं को लगता है कि इसका शिक्षण योग्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

तालिका 6: कार्य वातावरण चर के प्रति धारणा

| | | आवृत्ति | प्रतिशत | मान्य प्रतिशत | संचित प्रतिशत |
|-----|----------------------|---------|---------|---------------|---------------|
| वैध | बिल्कुल भी सीमा नहीं | 2 | .6 | .6 | .6 |
| | छोटी सीमा | 21 | 5.9 | 5.9 | 6.4 |
| | मध्यम सीमा | 25 | 7.0 | 7.0 | 13.4 |
| | काफ़ी हद तक | 193 | 53.9 | 53.9 | 67.3 |
| | बहुत बड़ा विस्तार | 117 | 32.7 | 32.7 | 100.0 |
| | कुल | 358 | 100.0 | 100.0 | |

व्याख्या: ऐसा पाया गया है कि 32.7% उत्तरदाताओं को लगता है कि काम का माहौल बहुत हद तक शिक्षण योग्यता को प्रभावित करने वाला कारक है और 53.9% को लगता है कि यह काफ़ी हद तक ही प्रभावित करता है। 0.6% उत्तरदाताओं को लगता है कि इसका शिक्षण योग्यता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

7. निष्कर्ष

ज्ञान, कौशल और पेशे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में निरंतर अद्यतन और परिशोधन न केवल शिक्षित युवाओं को बल्कि रोजगार योग्य युवाओं को तैयार करने के लिए अपरिहार्य होता जा रहा है। जब तक सेवा में सक्षम और प्रतिबद्ध शिक्षक नहीं होंगे, शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय विकास का उपयुक्त और संभावित साधन नहीं बन सकती है। इसलिए, इस अध्ययन ने एमबीए संस्थानों में पढ़ाने वाले संकायों के लिए आवश्यक सबसे आवश्यक शिक्षण दक्षताओं को समझने का प्रयास किया है। एक प्रभावी शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए इन दक्षताओं को लक्षित किया जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अंततः रोजगार योग्य और सफल छात्र प्राप्त होंगे। यह अध्ययन उन कारकों की पहचान करने में भी मदद करता है जो एक शिक्षक की दक्षताओं को

प्रभावित करते हैं। निष्कर्ष शैक्षणिक संस्थानों को एक संतुष्ट कार्यबल को लक्षित करके एक संतुष्ट कार्य वातावरण बनाने में मदद कर सकते हैं जो कुशल और प्रभावी प्रदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार यह अध्ययन एक शिक्षक की दक्षताओं को बढ़ाने, एक सही नौकरी के लिए एक सही शिक्षक का चयन करने और यह सुनिश्चित करने में शिक्षा संस्थानों में योगदान देता है कि प्रशिक्षण, विकास, प्रदर्शन मूल्यांकन और उत्तराधिकार योजना जैसी मानव संसाधन आधारित गतिविधियाँ दक्षताओं के सही सेट पर आधारित हैं।

8. संदर्भ

1. बोर्मन डब्ल्यूसी, मोटोविडलो एसजे. कार्य प्रदर्शन और प्रासंगिक प्रदर्शन: कार्मिक चयन अनुसंधान के लिए अर्थ। मानव प्रदर्शन. 1997;10(2):99-109.
2. बोयाल्लिस आरई. सक्षम प्रबंधक: प्रभावी प्रदर्शन के लिए एक मॉडल। जॉन विली एंड संस।, 1991.
3. चैन एक्सपी, शाउब्रोएक जे. विभिन्न संस्कृतियों में सहभागी निर्णय लेना और कर्मचारी प्रदर्शन: आवंटनवाद/मूर्खतावाद और प्रभावकारिता के मध्यम प्रभाव। प्रबंधन अकादमी जर्नल. 2002;45:905-914.
4. क्रिश्चियन एमएस, गार्ज़ा एस, स्लॉटर जेई. कार्य सहभागिता: कार्य और प्रासंगिक प्रदर्शन के साथ इसके संबंधों की एक मात्रात्मक समीक्षा और परीक्षण। कार्मिक मनोविज्ञान. 2011;64(1):89-136.
5. यूनिवर्सिटी ट्यून हुसैन ओएन मलेशिया में इन-सर्विस टीचर डिग्री प्रोग्राम (पीपीजी) के बीच योग्यता। तकनीकी शिक्षा और प्रशिक्षण जर्नल 2011;12(1):181-188.
6. क्रॉफर्ड ईआर, लेपाइन जेए, रिच बीएल. नौकरी की माँगों और संसाधनों को कर्मचारी संलग्नता और बर्नआउट से जोड़ना: एक सैद्धांतिक विस्तार और मेटा-विश्लेषणात्मक परीक्षण। जर्नल ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी. 2010;95(5):834-848.
7. डेसी ईएल, रयान आरएम. आंतरिक प्रेरणा और आत्मनिर्णय की अवधारणाएँ। मानव व्यवहार में आंतरिक प्रेरणा और आत्मनिर्णय में स्पिंगर, बोस्टन, एमए।, 1985, 11-40.
8. डेसी ईएल, रयान आरएम. स्वयं के प्रति एक प्रेरक दृष्टिकोण: व्यक्तित्व में एकीकरण। इन: आर. डिएन्स्टबियर(ईडी।), नेब्रास्का संगोष्ठी प्रेरणा पर: वॉल्यूम। 38. प्रेरणा पर परिप्रेक्ष्य। लिंकन, एनई: नेब्रास्का विश्वविद्यालय प्रेस।, 1991, p. 237-288.
9. डेसी ईएल, रयान आरएम. लक्ष्य प्राप्ति का "क्या" और "क्यों": मानवीय आवश्यकताएँ और व्यवहार का आत्मनिर्णय। मनोवैज्ञानिक पूछताछ. 2000;11(4):227-268.
10. डेसी ईएल, रयान आरएम. आत्मनिर्णय सिद्धांत का अवलोकन: एक जैविक-द्विआत्मक परिप्रेक्ष्य। डेसी ईएल में, रयान आरएम (एड.)। आत्मनिर्णय अनुसंधान की पुस्तिका। रोचेस्टर, एनवाई: रोचेस्टर विश्वविद्यालय प्रेस।, 2002.
11. डेमरौटी ई, बेकर एबी, नचराइनर एफ, शॉफिली डब्ल्यूबी. नौकरी की मांग-संसाधन मॉडल बर्नआउट का। जर्नल ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी. 2001;86(3):499-512.
12. डेमिर ई. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की व्यावसायिक व्यक्तित्व योग्यता का छात्रों द्वारा मूल्यांकन। जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग स्टडीज़. 2015;4:133-149.
13. डेनिसी एस, सोनेश एस. कार्यस्थल पर प्रदर्शन का मूल्यांकन और प्रबंधन। एस. ज़ेडेक (एड.) में, औद्योगिक और संगठनात्मक मनोविज्ञान की एपीए हैंडबुक। पी 2. संगठन के लिए सदस्यों का चयन और विकास (पृ. 255-279)। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन।, 2011.
14. डॉल डब्ल्यूजे, ज़िया डब्ल्यू, टोर्कज़ादेह जी. अंतिम-उपयोगकर्ता कंप्यूटिंग संतुष्टि उपकरण का एक पुष्टिकरण कारक विश्लेषण। प्रबंधन सूचना प्रणाली त्रैमासिक. 1994;18(4):453-461.
15. एफ्रॉन बी, तिबशिरानी आर. बूटस्ट्रेप का एक परिचय। न्यूयॉर्क: चैपमैन एंड हॉल/सीआरसी।, 1993.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.